पूजन करते समय चावल का एक कण भी नीचे नहीं गिरना चाहिए - आचार्यश्री विद्यासागर महाराज

अष्ट द्रव्य - जैन पूजन के लिए

आचार्यश्री विद्या सागर जी महाराज ने भाग्योदय परिसर में धर्मसभा के दौरान समझाया कि पूजा कैसे की जाती है जिस समय जो अर्घ चढ़ाना चाहिए वह चढ़ाएँ , इससे कर्मों की निर्जरा होती है पूजन करते समय हमेशा सावधानी बरतना चाहिए और चावल का एक कण भी नीचे नहीं गिरना चाहिए । आचार्यश्री ने कहा भक्ति और पूजन मन लगाकर करना चाहिए । पूजन करना आपको अच्छे तरीके से सीखना पड़ेगा । अर्घ चढ़ाते है और बिखराते है गली-गली, ऐसा नहीं होना चाहिए । समय का अपव्यय नहीं करना चाहिए बल्कि समय का उपयोग अच्छे कामों में करना चाहिए । मेंढ़क की कहानी सुनाते हुए आचार्यश्री ने कहा कि एक कुएँ में एक मेंढ़क रहता था । उसने ऊपर दो व्यक्तियों की आवाज सुनी कि आज यहां पर भगवान आ रहे हैं उसका भी मन हुआ दर्शन करने का और वह कुएँ से बाहर आकर जिस तरफ लोग जा रहे थे वह उसी तरफ बढ़ता गया लेकिन छोटा होने से कोई वाहन उसके ऊपर से निकल गया और उस मेंढ़क की यात्रा समाप्त हो गई । आप लोगों को भी हमेशा नीचे देखकर चलना चाहिए । संकलन - सीमा जैन, ललितपुर

आचार्यश्री पहले ऐसे संत, जिनके जीवन पर अब तक 55 पीएचडी

22 साल की उम्र में संन्यास लेकर दुनिया को सत्य-अहिंसा का पाठ पढ़ाने वाले आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज की एक झलक पाने सैकड़ों लोग मीलों पैदल दौड़ पड़ते है । उनके प्रवचनों में धार्मिक व्याख्यान कम और ऐसे सूत्र ज्यादा होते हैं जो किसी भी व्यक्ति के जीवन को सफल बना सकते है । वे अकेले ऐसे संत हैं जिनके जीवित रहते हुए उन पर अब तक 55 पीएचडी हो चुकी है । ये है उनका जीवन वृत्त - हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला, कन्नड़, मराठी आदि भाषाओं के जानकार विद्यासागरजी का बचपन भी आम बच्चों की तरह बीता । गिल्ली-डंडा, शतरंज आदि खेलना, चित्रकारी आदि का इन्हें भी बहुत शौक रहा । लेकिन जैसे-जैसे बड़े हुए आचार्यश्री का अध्यात्म की ओर रूझान बढ़ता गया । आचार्यश्री का बाल्यकाल का नाम विद्याधर था । कर्नाटक, बेलगांव के ग्राम सदलगा में 10 अक्टूबर 1946 को जन्मे आचार्यश्री ने कन्नड़ के माध्यम से हाईस्कूल तक शिक्षा ग्रहण की । इसके बाद वे वैराग्य की दिशा में आगे बढ़ें और 30 जून 1968 को मुनि दीक्षा ली । आचार्य का पद उन्हें 22 नवम्बर 1972 को मिला । शोध के लिए छात्र पढ़ते हैं मूक माटी । जैन दर्शन पर कई पुस्तकें लिखने के साथ ही वे कविता लेखन भी करते रहे । उन्होंने माटी को अपने महाकाव्य का विषय बनाया और मूक माटी नाम से एक खंडकाव्य की रचना की । भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा प्रकाशित उनकी यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई । विचारकों ने इसे एक दार्शनिक संत की आत्मा का संगीत कहा । इससे कई छात्र अपने शोध के लिए बतौर संदर्भ इसे उपयोग में ला रहे है । उनकी अन्य रचनाएँ नर्मदा का नरम कांकर, डूबो मत, लगाओ डुबकी आदि है । संकलन - मंजू जैन, भोपाल

अभिनंदन का अभिनंदन...

बहुत बहुत तुमको अभिनंदन ।
तुम हो भारत माँ के नंदन ।
जो तुमने करके दिखलाया ।
घर में घुसकर मार गिराया ।।
बहुत बहादुर तुम हो अभिनंदन ।
पूरा देश कर रहा तुमको वंदन ।
हर देशवासी की दुआ हुई कबूल
तभी तो वापिस आ गया अभिनंदन ।।
एक योद्धा ने सिखला दिया, तुमको सबक ।
अब आगे मत करना, कभी कोई भूल ।
कितने अभिनंदन और, बैठे है भारत में ।
कौन सा योद्धा कर देगा, तुम्हारा खेल खत्म ।।
अब तुमको मालूम पड़ा है, किससे तू उलझ रहा है ।
अब भी अगर न सम्भले तुम ? तो बहुत पछताओंगे ।
और अपनी बर्बादी का, जश्न तुम ही मनाओंगे ।
क्योंकि भारत के पास है, देशभक्त अभिनंदन ।।
इस बार भी तू फिर हार गया,
अपनी कायरता को दिखा गया ।
कितने भेड़ियों को तुम पालोगे,
हम उनको घुटनों के बल ला देंगे ।
क्योंकि भारत में है, देशभक्त अभिनंदन ।
जिसका पूरा देश आज, कर रहा अभिनंदन ।।
अभिनंदन, अभिनंदन, अभिनंदन, अभिनंदन ।।

यह कविता देश के वीर जाबांज विंग कमांडर अभिनंदन को समर्पित है ।

- संजय जैन, मुंबई

अमेरिका के कैलीफोर्निया में बनेगा भव्य जिनालय

भारत देश में जैन धर्म की ध्वजा फहराने वाले आचार्य गुरुवर विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य मुनि पुँगव सुधासागरजी महाराज जिन्होंने राजस्थान के रेगिस्तान की धरती के सूखे पड़े क्षेत्रों को फिर से हरा भरा करने का बीड़ा उठाकर सारे मंदिरों के महिमा को बता कर उस क्षेत्र का जीर्णोद्धार कराया । एक ऐसे महान संत जिनकी करुणा की जग में मिसाल है एक ऐसा उदाहरण हमारे सामने आया कि महाराज राष्ट्रीय स्तर पर पूरे भारत के क्षेत्रों पर नज़र है और गुरुजी की दृष्टि जिस क्षेत्र पर पड़ी है उसका इतिहास बना है । फरवरी में पूज्य मुनि पुँगव के पास कैलीफोर्निया (अमेरिका) का प्रतिनिधि मंडल सुदर्शनोदय तीर्थ क्षेत्र आंवा आया । जहाँ उन्होंने मूलनायक भगवान शांतिनाथ की शांतिधारा की और गुरुजी के दर्शन किये और गुरुजी से थोड़ा समय लेकर चर्चा की । उस चर्चा का विषय था कि कैलीफोर्निया (अमेरिका) में वहां की जैन समाज ने 68 एकड़ जमीन ली है जहाँ उनकी भावना है कि यहां एक ऐसा क्षेत्र पूज्य मुनि पुँगव के आशीर्वाद से बने जो कि वहां की समाज के भविष्य को संवार सके । उसके लिए उनको जगतपूज्य की प्रेरणा, मार्गदर्शन और आशीर्वाद चाहिए, और होना क्या था हमारे गुरुजी करुणा की जग में मिसाल हैं उन्होंने तुरंत प्रभाव से उन्हें आश्वस्त किया कि यहां से एक टीम आपके वहां आयेगी और जमीनी तौर पर सारी जानकारियां लेकर, सारी चीजें देखकर वापस आकर सारा ज्ञात करवाएँगे । उसके बाद का प्रारुप तैयार करवाया जायेगा । जो सदस्य कैलीफोर्निया की जाकर वहां वस्तु स्थिति की जानकारी लेगें उनके नाम -

वास्तुविज्ञ प्रतिष्ठाचार्य बा. ब्र. प्रदीप भैयाजी, वास्तुकार एवं आर्किटेक्ट श्रीपाल भाई नोगामा, आर्किटेक्ट मीतुल भाई सोमपुरा व एस.एम. सोमपुरा ।

वहां से वापस लौटकर गुरुजी के सम्मुख सारी जानकारी रखेंगे । उसी आधार पर गुरुजी निर्णय करेंगे । और जहां तक हम गुरुजी को जानते हैं मैं वहीं कहूंगा कि अब कैलीफोर्निया (अमेरिका) वालों के भाग्य खुल गए क्योंकि उन पर कृपा दृष्टि ऐसे संत की पड़ी है जिनके मात्र स्मरण से सारे काम हो जाते है, उनका कार्य सफल होता ही है ।

हम सभी की यही भावना है कि वहां एक ऐसा क्षेत्र गुरुजी के मार्गदर्शन में बने जिसकी ख्यात पूरे विश्व में फैलें ।

संकलन - आमोद जैन, कानपुर

अपना दायित्व निभायें -

गोलालारीय दर्शन पत्रिका 10 वर्षों से आपको नियमित उपलब्ध करानें में हम हरसंभव प्रयास करते हैं । हम मानते हैं कुछ परिवारों को पत्रिकायें समय पर प्राप्त नहीं हो पाती है । इसमें आपके संपूर्ण पते के समय शहर के पिनकोड का नहीं होना एक बड़ा कारण हो सकता है । आप अपना पूर्ण पता मय पिनकोड सहित समाज के वाट्सएप्प नंबर 94067-44064 पर भेज सकते है । इसके अतिरिक्त हमारी सबसे पीड़ा सिर्फ एक है कि पिछले कई वर्षों में आपके परिवार के मांगलिक प्रसंगों के अवसर पर हमारे आग्रह पर, आपकी सहमति पश्चात जो विवाह विज्ञापन प्रकाशित किये गये है उनमें से कुछ परिवारों द्वारा अभी तक अपनी सहयोग राशि जमा नहीं कराई गयी है । हम राशि मांगकर आपकी प्रतिष्ठा को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते है । हमारा ऐसा मानना है कि हर व्यक्ति को यह मालूम होता है कि उसे किसका बकाया चुकाना है । अत: आप अपने अंतर्मन की आवाज को नजरअंदाज न करते हुए अपने समाज की एकमात्र पत्रिका 'गोलालारीय दर्शन' के भविष्य पर गंभीरतापूर्वक विचार कर शीघ्र ही भुगतान की व्यवस्था करें ।

हमारा उन परिवारों से पुन: करबद्ध निवेदन हैं कि जिन्होंने अभी तक अपनी सहयोग राशि हमारे बैंक खाते में जमा नहीं कराई है । हमारे बैंक खाता का संपूर्ण विवरण पत्रिका में ही अंकित है । अधिक जानकारी के लिए आप संपर्क करे - 9424013136 ।

हार्दिक बधाई

रोटरी अंतर्राष्ट्रीय मंडल 3040 के वर्ष 2019-20 हेतु रोटरी क्लब सीहोर के पूर्व अध्यक्ष एवं शासकीय महिला पॉलीटेकनिक कॉलेज सीहोर में विभागाध्यक्ष के पद पर पदस्थ **डॉ. पंकज जैन** को असिस्टेंट गर्वनर मनोनीत किया गया। साथ ही रोटरी क्लब सीहोर, सोनकच्छ, हाटपिपलिया, भौंरासा एवं बरेठा का प्रभार दिया है । रोटेरियन डॉ. पंकज जैन एक प्राध्यापक के साथ ही समाज सेवी एवं प्रबंधन की कई पुस्तकों के लेखक भी है । आपको 2 बार राष्ट्रीय स्तर के पाठ्यपुस्तक लेखक पुरस्कार से अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा सम्मानित किया जा चुका है । भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा आपको राज्य स्तरीय मास्टर ट्रेनर भी नियुक्त कर सम्मानित किया जा चुका है । आप स्थानीय जन समाज सीहोर के संगठन मंत्री एवं अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़े हुए हैं ।

स्टेच्यू ऑफ प्यूरीटी परियोजना के महत्वपूर्ण कार्य के लिए **श्री प्रवीण कुमार जैन 'विश्व परिवार'** बुंदेलखंड क्षेत्र में मुख्य संयोजक के रुप में मनोनीत किया गया ।

नेशनल मीडिया फाउंडेशन दिल्ली द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर भोपाल की **साधना जैन** को गरिमामय कार्यक्रम में सम्मान किया गया । साधना जैन भोपाल आकाशवाणी से जुड़ी है । साथ ही समाज की अनेक संस्थाओं से जुड़कर मानव सेवा कार्य को पूर्ण मनोयोग से निष्पादित कर रही है ।

अ.भा. श्वेताम्बर जैन महिला संघ द्वारा आयोजित ''मेरी बेटी, मेरी शान'', ''मेरी माँ मेरा अभिमान'' प्रतियोगिता के ग्रैंड फिनाले में **श्रीमती निधि नितिन जैन** एवं उनकी बेटी **नित्यता जैन** ने दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया । पुरस्कार स्वरुप 21000/- की नगद राशि एवं कई गिफ्ट हैंपर प्राप्त हुई । इस प्रतियोगिता में कई राउंड्स थे जिसमें प्रमुख रुप से फैशन शो, स्किट, क्विज, नृत्य, पिता के नाम पत्र आदि राउंड्स आयोजित किये गये थे । जिसमें प्रतियोगी की पुरानी उपलब्धियों के लिए कोई पांईट्स नहीं थे । नित्यता जैन एक इंटरनेशनल चैस प्लेयर होने के साथ साथ नृत्य में भी रुचि रखती है, इसके अलावा पढ़ाई में भी टॉप पोजीशन लाने के साथ साथ एक कुशल वक्ता भी है ।

आपके परिवार में किसी भी सदस्य ने सामाजिक, धार्मिक, खेलकूद व अन्य क्षेत्रों में विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त की हो तो हमें प्रकाशन हेतु भेज सकते है।

समाज की महिलाओं व युवा पीढ़ी से अनुरोध है कि वे अपनी कवितायें, कहानी, लेख हमें अपने चित्र सहित प्रकाशन हेतु भेज सकते है । योग्य रचना को आगामी अंक में प्रकाशित किया जावेगा ।